दिनांक :- 17-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ. फारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक : प्रथम खंड (कला, अनुषांगिक)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- चतुर्थी

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- सिंधु घाटी की सभ्यता।

(सिंधु-सभ्यता के निर्माता कौन ?)

सिंधु सभ्यता को जो रूप हमारे सामने आता है, वह एक विकसित संस्कृति का रूप है। इसके प्रारंभिक चरण एवं क्रमिक विकास के बारे में निश्चित जानकारी नहीं है। यह विवादग्रस्त प्रश्न है कि सिंधु सभ्यता के निर्माता कौन थे। कुछ विद्वान हड़प्पा संस्कृति का प्रेरक मेसोपोटामिया की संस्कृति को

मानते थे। उनका मत है कि वह सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता की एक औपनिवेशिक शाखा थी जिसे सुमेर के निवासी ही सिंधु क्षेत्र में लाये थे। मेसोपोटामिया से सिंधु-सभ्यता के अनुप्राणित होने के पक्ष में व्हीलर का तर्क है कि मोहनजोदड़ो ने राजकीय अन्नागार और गढ़ी तथा दक्षिण पूर्व बुर्ज के निर्माण में लकड़ी के शहतीरों का प्रयोग हुआ है। व्हीलर का मत है कि इनके निर्माता कच्ची ईंटों के भवनों का निर्माण करने के अभ्यस्त थे। चूँकि इस तरह से निर्माण-प्रक्रिया मेसोपोटामिया के निवासी हो सकते हैं। गार्डनचाइल्ड ने भी व्हीलर के मत का समर्थन किया है। उनका कथन है कि उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर इस अनुमान की गुंजाइश नहीं है कि मोहनजोदड़ो जैसे नगर का विकास हड़प्पा-संस्कृति के गाँवों में हुआ। उनका मत है कि मेसोपोटामिया के निवासी समुद्र-मार्ग से

आये और अपनी विकसित सभ्यता के तत्वों को नवीन पृष्ठ भूमि में आरोपित कर एक नयी संस्कृति का विकास किये। कुछ विद्वान मेसोपोटामिया के निवासियों को सिंधु सभ्यता के निर्माता मानने को तैयार नहीं है। उनका तर्क है कि दोनों संस्कृतियों में अनेक आधारभूत भिन्नताएँ है। सर्वप्रथम मेसोपोटामिया की लिपी और सिंधु सभ्यता की लिपि में भिन्नता है। सुमेरवासी कीलाक्षर लिपी (cuneiform script) का प्रयोग करते थे जबकि सिंधुवासियों की लिपि अद्वितीय थी। मेसोपोटामिया चित्रलिपि या सांकेतिक लिपि थी। सिंधु सभ्यता की नगर-निर्माण योजना एंव नालियों की व्यवस्था विश्व में अद्वितीय थी। मेसोपोटामिया में मंदिर महत्वपूर्ण स्थान रखते थे लेकिन सिंधु क्षेत्र के उत्खनन से मंदिर का कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिला है। मेसोपोटामिया के समान यहाँ गन्ध कृते भी नही मिली है। इसके अतिरिक्त दोनों सभ्यताओं की भौतिक वस्तुओं

जैसे, आयुध, पाषाण, मूर्तियाँ मृद्‌भाण्ड मृण्मूर्तियाँ और मुहरो में भी असमानताएँ पायी जाती है। सुमेर वासी भावनों के निर्माण में कच्ची ईटों का व्यवहार करते थे जबकि सिंधु घाटी के निवासी पक्की ईटों का दोनों सभ्यताओं की नगर योजना और माप-तौल में भी फर्क है। यह मत भी व्यक्त किया गया है कि सिंधु-सभ्यता की वस्तुएँ मेसोपोटामिया और मेसोपोटामिया की सभ्यता की जो वस्तुएँ सिंधु-प्रदेश के अनेक स्थलों के उत्खनन से प्राप्त हुई हैं वे केवल परस्पर आदान-प्रदान एवं वाणिज्य व्यापार के सूचक है और इन्हें एक ही क्षेत्र की इस संस्कृति के उद्‌गम को सिद्ध करने का सबल प्रमाण नहीं माना जा सकता है।

कुछ विद्वान सिंधु सभ्यता का मूल ईरानी बलूची संस्कृति को मानते है। यह तर्क दिया जाता है कि हड़प्पा-सभ्यता

बलूच संस्कृतियों के आत्मीकरण के परिणाम स्वरूप हुए विकास का चरमोत्कर्ष है। पर्वतीय क्षेत्र के निवासी उपजाऊ भूमि एवं पर्याप्त जल के लिए पंजाब और सिंधु के मैदान में आये होंगे। नदियों से यातायात तथा सिंचाई की सुविधा। आहार के लिए मछलियों की सुलभता और उपजाऊ भूमि संस्कृति के विकास में सहायक हुई। लेकिन कुछ अन्य विद्वानों का कहना है कि भारत के लोगों ने ही सिंधु सभ्यता के नगरों का निर्माण किया था। श्री अमलानन्द घोष का कहना है कि भारत के लोगों ने ही सिंधु सभ्यता के निर्माता थे। प्रो० एस० आर० राव का मत है कि इस सभ्यता का विकास सिंधु की स्थानीय संस्कृतियों द्वारा धीरे-धीरे हुआ। आर्थिक समृद्धि के लिए सिंधुघाटी के निवासियों ने मेसोपोटामिया से व्यापारिक सम्बंध स्थापित किये और विभिन्न क्षेत्रों में

मानकीकरण किये। सिंधु सभ्यता के ग्रामीण स्थलों के निवासियों ने पूर्ववर्ती कृषक समुदाय के आर्थिक ढांचे तथा उसके बरतन बनाने की परम्परा को काफी हद तक बनाए रखा होगा और इसके साथ ही नये तत्वों को भी ग्रहण किया होगा। जैसे जैसे नये नये साक्ष्य उपलब्ध होते जा रहे थे, वैसे-वैसे इतिहासकार सिंधु सभ्यता के मूल को भारत में ही होने के विषय में गहराई से सोचने लगे हैं बलूचिस्तान सिंध और पंजाब के उत्खनन से स्पष्ट हो गया है कि मूल रूप से क्षेत्रीय आधार पर सिंधु-प्रदेश में सभ्य जीवन की शुरुआत हुई कुछ इतिहासकारों का मत है कि सिंधु-सभ्यता के निर्माता आर्य थे। सिंधु-सभ्यता और आर्यों की वैदिक सभ्यता एक ही सभ्यता के दो रूप हैं लेकिन इस मत को स्वीकार करने में अनेक कठिनाईयाँ हैं।

मूल रूप में सभ्यता और आर्यों की सभ्यता में अनेक विषमताएँ हैं। सर्वप्रथम, आर्य सभ्यता ग्रामीण और कृषि प्रधान थी। जबकि सिंधु सभ्यता नगरीय और व्यापार-प्रधान थी। आर्य युद्धप्रिय थे और उत्खनन में आक्रमण के आयुधों का अभाव है। गाय आर्यों के लिए पूजनीय थी किंतु सिंधु सभ्यता में बैल अधिक सम्मानीय था। आर्य घोड़े से परिचित थे लेकिन सिंधु घाटी के निवासी घोड़े से परिचित नहीं थे। आर्य ताँबा और काँसे, सोना, चाँदी, लोहा आदि धातु का उपयोग करते थे। परंतु सिंधुवासी पाषाण, काष्ठ ताँबे और काँसे का ही विशेष उपयोग करते थे। वे लोहे से परिचित नहीं थे। आर्यों और सिंधु-निवासियों के धर्म में भी अन्तर था। सिंधु-निवासी मूर्तिपूजक थे और वे शिव महादेव तथा लिंग की पूजा करते थे। आर्य मूर्तिपूजक नहीं थे।

Scanned with CamScanner